कथा सरिता

संतोष आत्मसम्मान का

आपने भी देखा होगा, बड़े शहरों में सार्वजनिक स्थलों पर कुछ भिखारी अपने कटोरे में साधारण बॉल पेन, रिफिल, पेंसिल, पॉकेट साइज़ कंघा या अन्य कोई छोटी-मोटी चीज़ें रखकर बैठते हैं। एक सज्जन एक भिखारी के कटोरे में एक-दो रुपये का सिक्का डाल वहीं खड़े-खड़े उसके बारे में सोचने लगे और कुछ क्षण बाद वह आगे चलने को मुड़े ही कि वह भिखारी बोला, `बाबू साहेब! आपने दो रुपये का सिक्का तो कटोरे में डाल दिया, पर उसमें रखी पेंसिल या रिफिल आपने नहीं ली। आपको जो पसंद हो, उठा लीजिए साहेब!' सज्जन बोले- `भई, मैंने तो भिखारी समझकर तुम्हें सिक्का दिया है।' `नहीं बाबू साहेब! उसके बदले कुछ तो ले लीजिए, भले ही पचास पैसे की हो।' अब वह सज्जन असमंजस में पड़ गए कि वह भिखारी है या दुकानदार! और उसकी ओर मुस्कराते हुए देखने लगे। भिखारी बोला- `साहब, हालात ने मुझे भिखारी ज़रूर बना दिया है, लेकिन मेरा थोड़ा-सा आत्म-सम्मान अब भी बचा है। अगर आप सिक्के के बदले कुछ भी ले लेंगे तो मुझे कम-से-कम इतना संतोष रहेगा कि भिखारी होने के बावजूद मैंने अपना स्वाभिमान नहीं खोया है।'

यह सुनकर उस सज्जन की आँखें भर आईं। उन्होंने अपने पर्स से 100-100 रुपये के दो नोट निकालकर उस भिखारी के हाथ में दिए और कटोरे में रखा सारा सामान (जो 50 रुपये से ज़्यादा मूल्य का नहीं था) लेकर उससे पूछा- `भइया दो सौ रुपये कम तो नहीं हैं?' वह भिखारी कृतज्ञ होकर रुंधे कंठ से बोला - `साहब, मैं आपका शुक्रिया किन शब्दों में अदा करूँ? आपने तो दरिद्रनारायण के रूप में आकर मेरे स्वाभिमान को फिर से ऊँचा कर दिया है। यह तो मेरा जीवन बदल देगा। मैं आज ही इन रुपयों से सुबह और शाम का अखबार बेचना शुरु कर दूंगा और फिर भिखारी बनकर कभी नहीं जिऊंगा।'

निष्कर्षः प्रत्येक मनुष्य में आत्म-सम्मान की भावना होती है - किसी में कम तो किसी में ज़्यादा। एक संत ने कहा है `यह जीवन बार-बार नहीं मिलता है। अब समय है कि मनुष्य उस चीज़ को पकड़े जो उसके भीतर है और फिर उसे समझने की कोशिश करे। अपने हृदय की प्यास बुझाए ताकि जीवन में शांति आ सके।'

इसका सार यह है कि हम पहले खुद को जानें, अपनी पहचान करें और फिर खुद को सही रास्ते पर लाकर आनंद से जिएं।

इच्छा-शक्ति

एक राजकुमार अपने सुंदर बगीचे में टहल रहे थे कि अचानक उनके मन में ख्याल आया, `बगीचे से उन्हें क्या फायदा है?' राजकुमार ने आम के पेड़ से पूछा- `बताओ, तुम मेरे लिए क्या कर रहे हो?' पेड़ ने जवाब दिया- `गर्मी में मेरी शाखायें मीठे आमों से लद जाती हैं, माली उन्हें इकट्ठा करके आपको व आपके मेहमानों के सामने प्रस्तुत करता है।' `शाबाश', राजकुमार बोले।

फिर राजकुमार ने विशाल वट वृक्ष से यही प्रश्न किया। उसने उत्तर दिया - `सुबह-सुबह जो पक्षी मधुर गीत गाकर आपको उठाते हैं, वह चहचहाते पक्षी मेरी शाखाओं पर आराम करते हैं। मेरी फैली शाखाओं के नीचे ही आपकी भेड़ें व गाय-भैंसें आराम करती हैं।' `शाबाश', राजकुमार ने कहा।

अब राजकुमार ने घास से पूछा - `तुम मेरे लिए क्या कर रही हो?' घास ने उत्तर दिया - `आपकी भेड़ें व गायों को पुष्ट बनाने के लिए हम अपना बलिदान देते हैं।' राजकुमार प्रसन्न होकर बोले, `बहुत अच्छा'।

इसके बाद राजकुमार ने एक नन्हें डेज़ी फूल से पूछा - `नन्हें मियां, तुम मेरे लिए क्या कर रहे हो'? डेज़ी ने कहा - `कुछ नहीं। मैं आपको मीठे फल नहीं देता, आपके पक्षियों को घोंसला बनाने लायक स्थान नहीं दे सकता। यदि मैं कुछ कर सकता हूँ तो वह यह है कि जितना हो सके, मैं एक सर्वोत्तम नन्हा डेज़ी बनूं।' ये शब्द राजकुमार के दिल को छू गये। घुटनों के बल झुककर उन्होंने नन्हें डेज़ी को चूम लिया और कहा - `शाबाश! नन्हें फूल। तुम-जैसा और कोई नहीं है। मैं तुम्हें हमेशा अपने परिधान के बटन-होल में लगाऊंगा, ताकि मुझे यह महान् सच्चाई हमेशा याद रहे कि मैं जहां तक हो सके अपने अंदर सर्वोत्तम बनने की इच्छा-शक्ति को विकसित करूँ। यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।'

सबकः ऊँची उपलब्धि हासिल करने के लिए हमें अपनी इच्छा-शक्ति को विकसित करने की प्रेरणा किसी से भी मिल सकती है, बशर्ते हम हर समय अपनी जागरुकता बनाये रखें। यह तभी संभव है जब हमारा नज़रिया सकारात्मक होगा।

कोरा कागज़

एक शिष्य गुरु के पास आया। शिष्य पंडित था और मशहूर भी, गुरु से भी ज़्यादा। सारे शास्त्र उसे कंठस्थ थे। समस्या यह थी कि सभी शास्त्र कंठस्थ होने के बाद भी वह सत्य की खोज नहीं कर पा रहा था। ऐसे में जीवन के अंतिम क्षणों में उसने गुरु की तलाश शुरु की। संयोग से गुरु मिल गए। वह उनकी शरण में पहुँचा। गुरु ने पंडित की तरफ देखा और कहा, `तुम लिख लाओ कि तुम क्या-क्या जानते हो। तुम जो जानते हो, फिर उसकी क्या बात करनी है। तुम जो नहीं जानते हो, वह तुम्हें बता दूंगा।' शिष्य को वापस आने में सालभर लग गया, क्योंकि उसे तो बहुत शास्त्र याद थे। वह सब लिखता ही रहा, लिखता ही रहा। कई हज़ार पृष्ठ भर गए। पोथी लेकर आया। गुरु ने फिर कहा, `यह बहुत ज़्यादा है। मैं बूढ़ा हो गया। मेरी मृत्यु करीब है। इतना न पढ़ सकूंगा। तुम इसे संक्षिप्त कर लाओ, सार लिख लाओ।'

पंडित फिर चला गया। तीन महीने लग गए। अब केवल सौ पृष्ठ थे। गुरु ने कहा, `यह भी ज़्यादा है। इसे और संक्षिप्त कर लाओ।' कुछ समय बाद शिष्य लौटा। एक ही पन्ने पर सार-सूत्र लिख लाया था, लेकिन गुरु बिल्कुल मरने के करीब थे। कहा, `तुम्हारे लिए ही रुका हूँ। तुम्हें समझ कब आएगी? और संक्षिप्त कर लाओ।' शिष्य को होश आया। भागा दूसरे कमरे से एक खाली कागज़ ले आया। गुरु के हाथ में खाली कागज़ दिया। गुरु ने कहा, `अब तुम शिष्य हुए। मुझसे तुम्हारा संबंध बना रहेगा।' कोरा कागज़ लाने का अर्थ हुआ, मुझे कुछ भी पता नहीं, मैं अज्ञानी हूँ। जो ऐसे भाव रख सके गुरु के पास, वही शिष्य है।

निष्कर्षः गुरु तो ज्ञान-प्राप्ति का प्रमुख स्रोत है, उसे अज्ञानी बनकर ही हासिल किया जा सकता है। पंडित बनने से गुरु नहीं मिलते।

भुवनेश्वर-ओडिशा। गवर्नर हाऊस में आयोजित कार्यक्रम में ओडिशा के राज्यपाल एस.सी. जमीर से हाथ मिलाकर अभिवादन करते हुए ब्र.कु. बिजय,पी.आर.ओ.,ब्रह्माकुमारीज़। साथ हैं ब्र.कु. लीना व अन्य।

भरतपुर-वैर(राज.)। 'एक शाम शिव पिता के नाम' कार्यक्रम में एस.बी.बी.जे. बैंक प्रबंधक अशोक कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. कविता व ब्र.कु. संतोष।

भादरा-राज.। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकान्ता। साथ हैं बायें से सरपंच सुरेश बंसल, महाराजा अग्रसेन आई.टी.आई. कॉलेज के चेयरमैन सुशील गुप्ता, ब्र.कु. डॉ. वैशाली, ब्र.कु. गीता, प्रधान संतोष वेनीवाल, महाराजा अग्रसेन स्कूल के चेयरमैन मीना गुप्ता, डी.एस.पी. राजेन्द्र वेनीवाल व पार्षद हरीश प्रकाश शर्मा।

भरतपुर-राज.। महिलाओं के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्रीमती कुसुम वर्मा,उपनिदेशक जिला शिक्षा अधिकारी भरतपुर, श्रीमती रश्मि बाला जैन,पूर्व व्याख्याता एम.एस.जे. कॉलेज भरतपुर। साथ हैं ब्र.कु. कविता,भरतपुर, ब्र.कु. कमलेश,वैर, गार्गी बहन,युवा संदेश पत्रिका की संचालिका व अन्य।

गाज़ियाबाद-कवि नगर। होर्डिंग ओनर सिकन्दर यादव को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं ब्र.कु. सुतीष व ब्र.कु. राजेश।

फरीदाबाद-सेक्टर 21डी.। महाशिवरात्रि पर आयोजित मेले के दौरान उपस्थित हैं वरिष्ठ भाजपा नेपा रेणु भाटिया, ब्र.कु. प्रीति व अन्य।